।। શ્રી ગોકુલેશો જયતિ ।।

।। શ્રી કૃષ્ણાય નમઃ ।।
।। શ્રી ગોપીજન વલ્લભાય નમઃ ।।
।। શ્રીમદાચાર્યચરણ-કમલેભ્યો નમઃ ।।
।। શ્રી ગુંસાઈજી-પરમ-દયાલવે નમઃ ।।
।। શ્યામ સુંદર શ્રી યમુને નમઃ ।।
।। શ્રી ગોકુલેશ ચરણકમલેભ્યો નમઃ ।।
।। શ્રી ગુરવે નમઃ ।।

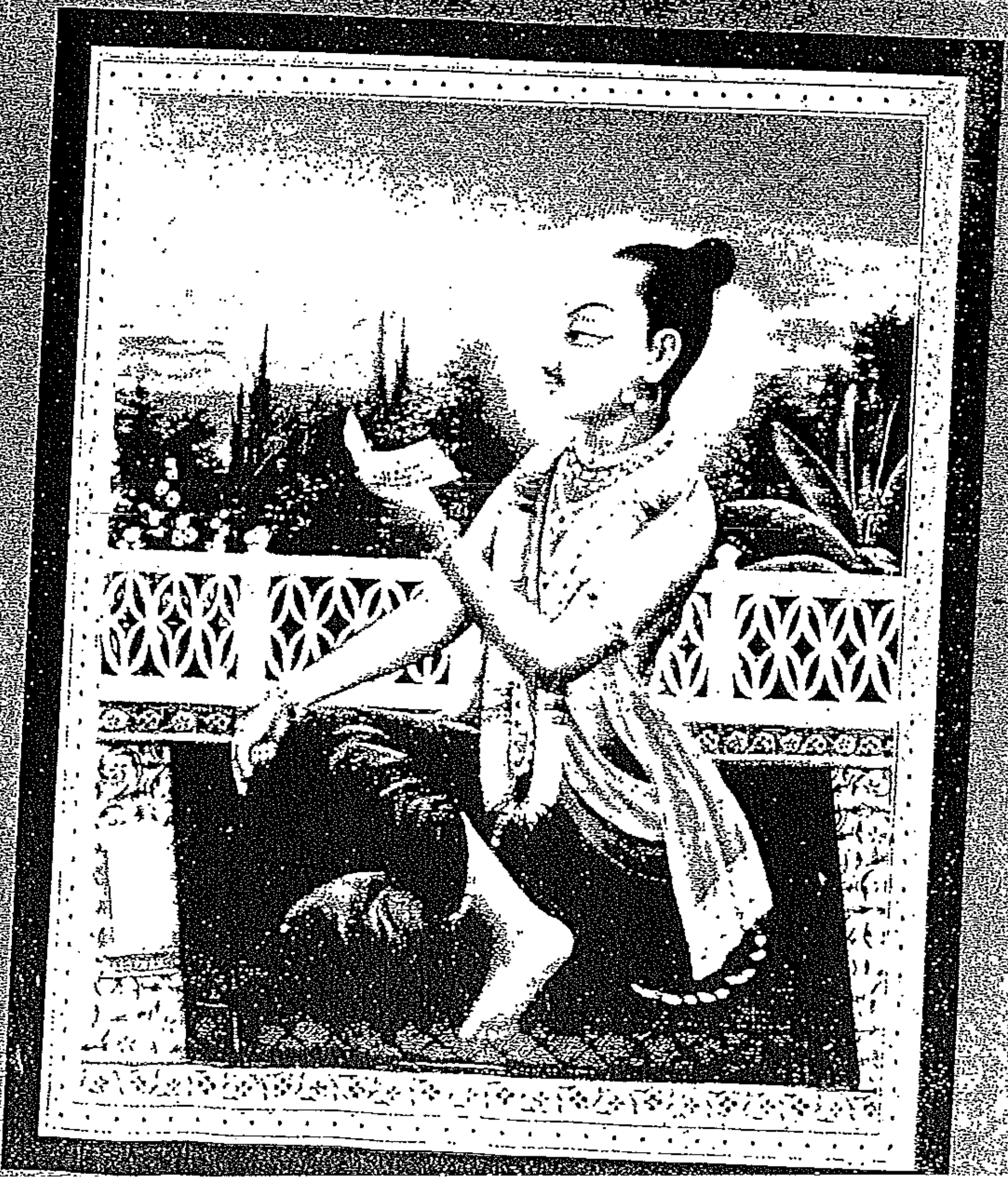

વધાઈ કે

જૈ જૈ શ્રી ગોકુલેશ

શ્રી જન્માષ્ટમી નાં ઉત્સવ જાગરણ ક્રમ
કિર્તન

૧. મંગલાચરણ

૨. માહાત્મ્ય ના ૪ પદ
કિ. કુંજ ૮૦૨ પદ્મ ધર્યો ①
કિ. કુંજ ૧૧૫૯ મોહન નંદરાય કુમાર ②
કિ. કુંજ ૮૦૧ બંદે ચરન ③
કિ. કુંજ ૧૦૫૯ ચરણ કમલ (શ્રી વલ્લભજીની વધાઈ) ④

૩ વ્રજ ભયો મહરિ કે પુત ⑤

૪ મારુ રાગ કિ. કુંજ ૭૯૨, ૭૯૧ (૬,૭,૮)

૫ મલ્હાર રાગ કિ. કુંજ ૭૮૬, ૭૮૮, ૭૮૯, ૧૯૩૨ (૯ 10, ૧૧, ૧૨)

૬ ગૌરી રાગ કિ. કુંજ ૭૯૩, ૭૯૪, ૭૯૫, ૭૯૬, ૭૯૭ (૧૩–૧૭)

૭ જૈજૈવંતી રાગ કિ. કુંજ ૭૯૮, ૭૯૯, ૧૯૩૩ (૨૦)

૮ નાયકી રાગ કિ. કુંજ ૮૧૬, ૮૧૭, ૮૧૮ (૨૧–૨૫)

૯ કાન્હરો રાગ કિ. કુંજ ૮૦૩–૪, ૫, ૬, ૭, ૮, ૯, ૧૦, ૧૧
૧૨, ૧૩, ૮૧૪ (૨૬–૩૯)

૧૦ બિહાગ રાગ કિ. કુંજ ૮૧૯ (૪૦–૪૧)

૧૧ બિહાગ રાગ કિ. કુંજ ૮૨૦ (છેલ્લુ ગવાનું (૪૨)
શ્રવણ સુનિ સજની – પુરુ કરી

૧૨ ત્રિભુ રુતુ અતિ ઉમે અરિ રેર સુનાવત . . . .
ભૈયા ભયો નંદ કે લાલ – ગાઈ
ખુબ નાચ ગાન જમાવુ

૧૩ ૧૨–૩૯ મિનિટે શ્રીમદ્ ભાગવત દશમ સ્કંધ ના
ત્રીજા અધ્યાય ના સ્લોકો વાંચે [illegible] જાગતા)

૧૪ વ્રજ ભયો મહરિ કે પુત

Mr. Girish P. Baxi
5 Thornton Ct
E Brunswick, NJ 08816-4075

।। श्री गोकुलेशो जयति ।।

चिन्तासन्तानहन्तारो यत्पादाम्बुजरेणवः ।
स्वीयानां तान्निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।।
यदनुग्रहतो जन्तुः सर्वदुखातिगो भवेत् ।
तमहं सर्वदा वन्दे श्रीमद्वल्लभनन्दनम् ।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धिशायिनम् ।
लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ।।
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च त्रिभिस्तथा ।
षड्भिर्विराजते योऽसौ पञ्चधा हृदये मम ।।
गोकुलस्य तु यो गोप्ता पुष्टिसुपथरक्षिता ।
जनिता तुर्यवंशस्य गोकुलेशं नमामि तम् ।।
श्रीगोकुलपतेर्नित्यं शुभदमास्पदं महत् ।
श्रीवाल्लभमते निष्ठं तुर्यपीठं वयं नुमः ।।
यस्य दर्शनमात्रेण भवेन्नेत्रोत्सवो नृणाम् ।
सदानन्दस्वरूपं तं देवकीनन्दनं नुमः ।।
निस्सृत्य यन्मुखाम्भोजाद्दर्शनं दर्शनं भवेत् ।
पथसन्दर्शकं भक्त्या देवकीनन्दनं नुमः ।।
अविद्यारूपसंसारे सुविद्याप्रापको जनान् ।
श्रीदेवकीसुतपादानां पादरेणुर्प्रसीदतु ।।
बुद्धिप्रेरककृष्णस्य पादपद्मं प्रसीदतु ।
ध्यानाऽसमर्थजीवानामस्माकं सर्वदा स्वतः ।।

જન્માષ્ટમી શગારના સમયે લેવાના કિર્તન
પ્રથમ ચાર માહાત્મયના પદ

① पद्म धर्‌यो

(1) जन ताप निबारन चक्रसुदर्शन धर्‌यो कमल कर भक्तनकी रक्षाके कारन ॥ १ ॥ शंख धर्‌यो रिपु उदर विदारन। गदा धरी दुष्टन संघारन॥ चारौं भुजा चारौ आयुध धरे नारायन भुवभार उतारन ॥ २ ॥ दीनानाथ दयाल जगत गुरु आरति हरन भक्त चिंतामनि । परमानंददासकौ ठाकुर यह औसर औसर छाँडो जनि ॥३॥

② ॥ राग

(2) मालव ॥ ॥ मोहन नंदराय कुमार प्रगट ब्रह्म निकुंज नायक भक्त हित अवतार ॥ १ ॥ प्रथम चरणसरोज बंदौ स्यामघन गोपाल। ललित कुंडल गंडमंडित चारुनैन बिसाल ॥२॥ बलराम सहित विनोद लीला शेष संकर देत । दास परमानंद प्रभु हरि निगम बोलत नेत ॥३॥

(3) ॥ बंदे धरन गिरिवर भूप। राधिकामुख कमल लंपट मत्तमधुप स्वरूप ॥१॥ बंदे रसिक वर संगीत सुखनिधि। क्वनित वेणु अनूप ॥ कहि कृष्णदास उदार उरपर लोलमाल अनूप ॥२॥

४ ॥ राग

(४) कान्हरो ॥ ॥ चरनकमल बंदौं जगदीश जे गोधनके संग धाये॥ जे पदकमल धूर लपटाने कर गहि गोपिन के उर आये ॥१॥ जे पदकमल युधिष्ठिर पूजत राजसूयमें चलि आये ॥ जे पदकमल पितामह भीषम भारत देखन ते आये ॥ २ ॥ जे पदकमल शंभु चतुरानन हृदय कमलके अंतर राखे॥ जे पदकमल रमा उर भूषन वेद भागवत जे भाखे ॥३॥ जे पदकमल लोकत्रय पावन बलि राजाकी पीठ धरे॥ ते पदकमल दास परमानँद गावत प्रेम पियूष भरे ॥४॥

राग देवगंधार ॥ ब्रज भयो महरिकैं पूत जब यह बात सुनी॥ सुनि आनंदे सब लोग गोकुल गणित गुनी॥ ब्रज पूरब पूरे पुन्यरूपी कुल सुथिर थुनी ॥ ग्रह लग्न नक्षत्र बलि सोधि कीनी वेद धुनी ॥ १ ॥ सुनि धाईं सब ब्रजनारि सहज सिंगार कियें ॥ तन पहरैं नौतन चीर काजर नैन दियें॥ कसि कंचुकी तिलक लिलाट शोभित हार हियें॥ कर कंकण कंचन थार मंगल साज लियें ॥ २ ॥ वे अपने अपने मेल निकसीं भाँति भलीं॥ मानौं लाल मुनिनकी पाँति पिंजरन चूर चलीं ॥ वे गावें मंगलगीत मिलि दश पाँच अलीं ॥ मानौं भोर भयौ रवि देखि फूली कमल कलीं ॥ ३ ॥ उर अंचल उड़त न जान्यौ सारी सुरंग सुहीं ॥ मुख माँड्यो रोरी रंग सेंदुर मांग छुहीं ॥ श्रम श्रवनन तरल तरौना बेनी शिथिल गुहीं ॥ शिर बरषत कुसुम सुदेश मानो मेघ फुंहीं ॥४॥ पीय पहलें पौहोंची जाय अति आनंद भरीं ॥ लई भीतर भवन बुलाय सब शिशु पाँय परीं ॥ एक बदन उघारि निहारत देत असीस खरी ॥ चिरजीयौ यशोदानंद पूरन काम करी ॥५॥ धन्य धन्य दिवस धन्य रात्र धन्य यह पहर घरी ॥ धन्य धन्य महरिजू की कूँख भागि सुहाग भरी ॥ जिन जायो ऐसो पूत सब सुख फलन फरी ॥ थिर थाप्यो सब परिवार मन की शूल हरी ॥६॥ सुनि ग्वालन गाय बहोरि बालक बोलि लिये ॥ गुहि गुंजा घसि बनधातु अँग अँग चित्र ठये ॥ शिर दधि माखनके माँट गावत गीत नये ॥ संग झाँझ मृदंग बजावत सब नंद भवन गये ॥७॥ एक नाचत करत कुलाहल छिरकत हरद दही ॥ मानौं बरखत भादौंमास नदी घृत दूध बही ॥ जाको जहीं जहीं चित जाय कौतक तहीं तहीं॥ रस आनंद मगन गुवाल काहू बदत नहीं ॥८॥ एक धाय नंदजूपै जाय पुनि पुनि पाँय परैं॥ एक आप आपुहिं माँझ हँसि हँसि अंकै भरैं॥ एक अंबर सबही उतारि देत निशंक खरैं ॥ एक दधिरोचन और दूब सबनके शीस धरैं॥९॥ तब नंद न्हाय भये ठाड़े अरु कुश हाथ धरैं॥ नांदीमुख पितर पुजाय अंतर सोच हरैं॥ घसि चंदन चारु मँगाय विप्रन तिलक करैं॥ बर गुरुजन द्विजन पहराय सबनके पाँय

परैं ॥ १०॥ गन गैया गिनी न जाय तरुन सुबच्छ बढ़ी ॥ नित चरैं यमुनाजूके काछ दूने दूध चढ़ी ॥ खुर रूपे ताँबे पीठ सोने सींग मढ़ी ॥ ते दीनी द्विजन अनेक हरखि असीस पढ़ी ॥११॥ तब अपने मित्र सुबंधु हँसि हँसि बोलि लिये ॥ मथि मृगमद मलय कपूर माथें तिलक किये ॥ उर मणिमाला पहराय बसन विचित्र दिये ॥ मानों बरषत मास अषाढ़ दादुर मोर जिये ॥१२॥ वर बंदी मागध सूत आँगन भवन भरैं ॥ ते बोलैं लै लै नाम हित कोऊ ना बिसरैं ॥ जिन जो जाँच्यौ सो दीनी रस नँदराय ढरे ॥ अति दान मान परधान पूरन काम करे ॥ ॥१३॥ तब रोहिनी अंबर मगाय सारी सुरंग घनी ॥ ते दीन बधून बुलाय जैसी जाय बनी ॥ वे अति आनंदित बहोरि निज गृह गोप धनी ॥ मिलि निकसीं देत असीस रुचि अपुनी अपुनी ॥१४॥ तब घरघर भेरि मृदंग पटह निसान बजे ॥ वर बाँधी बंदनमाल अरु ध्वज कलश सजे ॥ तब ता दिनतें वे लोग सुख संपति न तजे ॥ सुनि सूर सबनकी यह गति जे हरि चरन भजे ॥ १५ ॥ १ ॥

(६) मारु

२ ॥ राग मारू ॥ ॥ आज कहूँते या गोकुलमें अद्भुत बरखा आईहो ॥ मणिगण हेम हीर धाराकी ब्रजपति अति झरलाई ॥१॥ बानी बेद पढ़त द्विज दादुर हिये हरखि हरियारे । दधि घृत नीर क्षीर नानारँग बहि चले खार पनारे ॥२॥ पटहनिसान भेरि सहनाई महा गरजकी घोरें । मागध सुत वद चातक पिक बोलत बंदी मोरें ॥३॥ भूषन बसन अमोल नंदजू नरनारिन पहराये शाखा फल दल फूलन मानों उपवन झालर लाये ॥४॥ आनंद भरी नाचत ब्रजनारी पहरें रंगरंग की सारी । बरनबरन बादरन लपेटी विद्युत न्यारी न्यारी ॥५॥ दरिद्र दावानल बुझे सबनके याचक सरोवर पूरे । बाढ़ी सुभग सुजस की सरिता दुरित तीरतरु चूरे ॥६॥ उल्ह्यौ ललित तमाल बाल एक भई सबन मन फूल । छायाहित अकुलाय गदाधर तक्यौ चरनकौ मूल ॥७॥ १

⑦ मारु

॥श्रीगोपाल लाल गोकुल चले हों बलिबलि तिहिकाल मोद भरे बलदेव गोद लै अखिल लोक प्रतिपाल ॥१॥ अरुन उदय जैसें तम फूटत खुलि गये कुटिल कपाट महावेग बल छाँड़ि आपनों दीनी श्रीयमुनाबाट ॥ २॥ भोर भयें जैसे कुमुदिनी मूँदत कंसादिक भये मोहे । संत जननके मन अम्बुज वन फुले डहडहे सोहे ॥ ३ ॥ बारबार फुहीं फूलसी बरखत अंबुद अंबर छायौ । अपनों निज वपु शेष जानि तहँ बूँद बचावन आयौ ॥ ४ ॥ परम धाम जग धाम श्याम अभिराम श्रीगोकुल आये । नंददास आनंद भयौ ब्रज हरखित मंगल गाये ॥५॥ २ ॥

⑧ मारु

सुखद रवि-कोटि सम भवन भ्राजे । उदयौ आनंदनिधि गुप्त संकेतमें प्रगट दुंदुभि दिव्य तूर बाजे ॥१॥ कमललोचन अद्भुत अमित शोभा बढ़ी पढ़ि न आवै बदंत निगम चारौ । शिव ब्रह्मा सुर वचनते धरनी कौ प्रगट प्राणेश ह्वै भार टार्यौ ॥ २ ॥ महामुनि कंठ जीवन मुक्तिकी रूप ब्रह्म शाखा त्रियं शक्ति कीनी । सहस्र कुंतल बिथुरी कंज मधुपावलि पीवत मकरंद झनकार हीनी ॥ ३ ॥ सांख्य योगाधिपति श्रवन कुंडल धरैं हरे नैनन एन तात माता । दसन दामिनी छटा श्याम अंग घन घटा हृदें श्रीवत्स अंक विश्वत्राता ॥ ४ ॥ हरित बनमाल दुति कंठ हिंडोलगति देखि सुरनाथ कर धनुष छाँड्यौ । चार आयुध चार भुजनमें धरैं छबि देखि वसुदेव आनंद बाढ्यौ ॥ ५ ॥ निगम आगम वचन मेघ गंभीर सम सुखद सरस विस्तार कीनौ । विविध उपदेश आनकदुंदुभीकौं दियौ मुदवाति ब्रह्मपथ बोध दीनौ॥६॥ जननी जाचन हेत द्वै भुज प्रभुभये स्तुति प्रसन्न वदन कहा कहूँ शोभा । कुसुम सुकुमारसुत प्रसूत प्रपंच युत गति मति कथित तहाँ भये सुलोभा ॥ ७ ॥ जड़ जात लोह बंधत मोक्ष भये प्रीति करि स्मरण किये क्यों न लेखे असुरगण यूथ यूथाधिपति भ्रम भयौ चले ब्रज ईश तहाँ कहाँ विशेष।

---

१ सवेरो, २ कमल, ३ बूँद, ४ मेघ, ५ शरीर, ६ कहैं हैं, ७ चार वेद, ८ बेद की शाखा, ९ स्त्री, १० भँवरा, ११ पाप, १२ छिन्ह, १३ रक्षाकरिवे वारौ, १४ इन्द्र, १५ सनेह मुक्त, १६ भोर भयौ।

॥८॥ सप्तपातालते नागंपतिकी छटा आई प्रभुशीशपर छत्र तान्यौ। कूजत कोकिल पवित्र सिंघकल माधुरी धन्य वसुदेव सुत अधिक मान्यौ ॥९॥ द्रुम लता फूली स्तबंकाकार होइकैं विवशभये प्राणपति चरंन लागे। जलंद कण एकएकहि परत हरि हेत मनहुँ पुलकित वृक्ष स्रवत रागे ॥ १० ॥ सिंधुके निकट गये महाभक्त मेघ तब पति जानि लाजिके कटक भाजे। आपगति स्थूल सुर जानि आपहि खिसेहेत याते विधु नक्षत्र राजे॥११॥ जगतहिं को भवत विशुद्ध मति सौरिमहाभाग्य वर भाग्य गाऊँ। तरणिजा कूल अति असिय पूरण बहै गवनकौ हेत सुनिजे बनाऊँ॥ १२ ॥ सिंधुगृहणी सुतांनाथ आये जानि ब्रीड़ाते सकुच अति तन दुरायौ। कनक अर्घादि उपचारकौं थकि रहे जामात्रा बहुत आनंद पायौ ॥ १३ ॥ चले अंतर मध्य वृष्टि घोषमें जसुमति भवनमें अपर अजनी। लीनी दुहितां हाथ कुँवरको तहाँ धर हरण करि नाथ ब्रह्मांड रजनी ॥ १४ ॥ ब्रजनाथ नंद आनंदमय विमल वपु सुख देन निज रूप प्रगट कीनौ। लीला विस्तार करि रिपु यूथ सकल हँर धरि गिरिराज ब्रज राखि लीनौ ॥१५॥ ३ ॥

(१) मल्हार

ब्रजमें होत कुलाहल भारी ॥ आनँदमगन ग्वाल सब नाचत देत दिवावत गारी ॥ १ ॥ नंदरायके भवनमें आवत आनंदित ब्रजनारी। पुत्र जन्म सुनि हरख भयौ है परमानँद बलिहारी ॥ २ ॥ ४ ॥

(10) ३ ॥राग मलार॥ ॥ मंदिल बाज्यौ रे बाज्यौ सकल घोष सुहायौ गाज । हमारे राय घर ऐसौ ढोटा जायौ जसुमति आज पूर मनके काज ॥ १ ॥ सुनिसुनि चलीं अली गृहगृहते सजिसजि नव सत साज । दधिघृत भरि काँवरि काँधे धरि आये गोप समाज ॥२॥ धरि सिर दूब तिलक करि माँथे सथिये धरि दुहुँ वाज । भीतर जाय बदन निरखत ही बँधी प्रेम की पाज ॥ ३ ॥ श्रीवृषभान देत पट भूषन धेनु देत ब्रजराज । अविचल रहौ जमुनजल ज्यों थिर ब्रजजनके सिरताज ॥४॥ ॥

(11) बधाई री बाजत आज सुहाई श्रीगोकुलराजके धाम । रानी जसुमति ढोटा जायौ है मोहन सुंदर श्याम ॥ १ ॥ सुनि सब गोप घोषके वासी चले बर बसन बनाय । तापुरकी मंगल ब्रज बीथिनै भीर न निकस्यौ जाय ॥२॥ आईं सब गोप वधू मिलि साथन हाथन कंचन थार । कमल बदन सब बनी कमलासी झलकत कुंडल हार ॥३॥ नाचत ग्वाल करत कुतूहल दधि घृत खोरें गात । देत मँगाय बसन पट भूषण फूले अंग न मात ॥४॥ जो जाके मन हुती कामना सो पुजई नँदराय । नंददासकों दई कृपाकरि अपने ललनकी बलाय ॥ ५ ॥ ॥

(12) आँगन दधिको उदधि भयो । गोपी ग्वाल फिरत महरानें सकल संताप गयो ॥ १ ॥ वकसत पगा पिछौरी गुनियन अति आनंद भयो । नंद यशोदाके मन आनंद धोंधीके प्रभु जनम लयो ॥२॥ ३ ॥

गौरी

(१३) हौंतौ एक नई बात सुनि आई । महरि यशोदा ढोटा जायौ आँगन बजत बधाई ॥१॥ कहिये कहा कहइ नहीं आवै रतन भूमि छबि छाई । नाचत विरध तरुन और बालिक गोरस कीच मचाई ॥ २ ॥ द्वारें भीर गोप ग्वालनकी वरनौं कहा बड़ाई । सूरदास प्रभू अंतरयामी नंदसुवन सुखदाई ॥३॥

(९४) ॥

॥ मैं सखी नई चाँह एक पाई । ऐसौ दिवस नंदजूकें सुनियत उपज्यौ पूत कन्हाई ॥१॥ बाजत पणव निशान पंच विधि रुंज मुरज सहनाई । गाँगगाँम ब्रज हाट लुटाये आनंद उर न समाई ॥२॥ चलौ सखी हमहूँ मिलि जैहैं वेगि करौ अतुराई । कोऊ भूषन पहरि पहरावत चलौ सबेरें जाई ॥ ३ ॥ कंचन थार दूब दधि रोचन गावत चली बधाई । भाँतिभाँति बनि बनि युवतीगण उपमा कछू न आई ॥ ४ ॥ अमर विमान चढ़े सुख देखत जयजय शब्द सुहाई । सूरदास प्रभु भक्त हेतु है दुष्टनकों दुखदाई ॥ ५ ॥

(९५) ॥राग गौरी॥ ॥आज बधायौ श्रीब्रजराजकैं रानीजू जायौ है मोहन पूत ॥ ध्रु० ॥ मास भादौं द्यौस आठें रोहिनी बुधवार । यशोदाकी कूखि प्रगटे श्रीकृष्ण लियौ अवतार ॥ १ ॥ बहोत नारि सुहाग सुंदर सबै घोषकुमारी।सजन प्रीतम नाम लै लै देत परस्पर गारी ॥२॥ पुत्र मानौं भये घरघर निर्तत ठामठाम । नंदद्वारें भेट लै लै उमग्यौ गोकुल गाम ॥३॥ सथिये श्यामा धरत द्वारैं सात सींक बनाय । नव किसोरी मुदित ह्वैह्वै गहत जसुमति पाय ॥ ४ ॥ चौक चंदन लीपिकें आरती धरी है संजोय । कहत घोषकुमार ऐसौ आनंद जो नित होय ॥५॥ एक मानिनी मंगल गावै लीला गावैं ग्वाल । एक माखन दूध दधि लै छिरकत फिरतहैं बाल ॥६॥ एक हेरी दै दै नाचै एक झटके धाई । एक काहू बदत नाँहीं एक खिलावत गाई ॥ ७ ॥ एकनारी वृद्ध बालिक एक जोबनजोरि । एक काहू बदत नाँही एक हँसत सुख मोरि ॥ ८ ॥ कृष्ण जन्म प्रेम सागर होत घोष विलास । देखि ब्रजकी संपदा जन फूले माधौदास ॥९॥

॥

(९६) हेरी हेरीरे भैया हेरीहेरी ॥ ध्रु० ॥

।हेरीदे किन गावही भलौ बन्यौ है काज । रानी जसुमति ढोटा जायौ आयौ ब्रजमें राज ॥ १ ॥ पट पीरौ प्योसारकौ रानी जसुमति पहिरै ताहि । दामिनिके भोरें गयौ मोमन धोखौ आहि

॥२॥ नेतिनेति जासौं कहै ध्यान न आवै रूप। सो या बाबा नंदके
पर्‌यौ देखियत सूप ॥३॥ फूले फिरत गुवालिया विप्रन बूझत धाई।
कहा कुँवरकौ नाम है हमसौं कहौ सुनाई ॥४॥ नामनकी गिनती नहीं
सबहिनके सिरताज। पहलौ तो सुनिलेहु भैया जाकौ नाम गरीब
निवाज ॥५॥ बूढ़ी बाँझ सबै स्रवैं क्षीर प्रवाह बढ़ायौ। चाटत चरन
गोपालके मानौं इनहीकौ जायौ ॥६॥ सब ग्वालन मिलि मतौ मत्यौ
करि मनमें आनंद। आवौ पकरि नचाइये ब्रजपति बाबानंद॥७॥ ऊँचे
मानकौ चौंतरा बैठे हैं सिरदार। देखत भोरोसौ लगै वाकौ चित्त उदार
॥८॥ लघुभैया पाँयनपरे सकुचतहैं ब्रजराज। उठि किन दादा नाचही
पूत भयौहै आज ॥९॥ नाचत बाबानंदजू संग लिये सब ग्वाल। मलकत
थोंदा हालही देखि हँसीं ब्रजबाल ॥१०॥ एक ओर ब्रजग्वालिया एक
ओर सब पौंनि। पहरावत मधु मंगलै या ब्रजकी महतौंनि ॥११॥ फूलि
कह्यौ वृषभानजू पूरब पुन्य सगाई। कीरत कन्या होइगी तौ देहौं
कुँवरकन्हाई ॥१२॥ भैयाभैया कहि टेरियौ कहा बड़े कहा छोट। ठकुराई तिहुँ लोककी दुरी अहीरन ओट ॥१३॥ यह पद गायौ हेतसौं गंग
ग्वाल सुखपाय। रौंमरौंम रसना करौं तौ मोपै बरन्यौ न जाय ॥१४॥

(१७) ॥ २ ॥ मंदिलरा बाजेही बाजे बाजे माई नंदराय दरबार
॥ ध्रु० ॥ धुनि सुनि चलीं अली जिततिततैं नबसत साजि सिंगार।
भूषण वसन विचित्र कीये शुभ ग्रह लग्न विचार ॥१॥ तिलक साज
रोरी अक्षत लै श्रीफल कंचनथार। प्रेम मगन भई गावति आवति
सब मिलि मंगलचार ॥ २ ॥ दामिनिसी भामिनी चहुँदिशितें आई
भवन मँझार। जसुमति सुत घनश्याम विलोकत देति अपनपौ वारि
॥ ३ ॥ बदन बिलोकत हियौ न तोषत इकटक रही निहार। मनहुँ
चंद लखि थकित चकोरी भई है सकल मनुहार ॥ ४ ॥ सथिये चित्र
किये शुभ युवतिन बाँधी बंदनवार। मानौं अखिल भुवनकी शोभा
राजत गोप दुवार ॥५॥

आये गोप ओपसौं ब्रजजन फूल्यौ सब परिवार। हँसिहँसि मिलत नंद आनंदित करत सकल मनुहार ॥ ६ ॥ पितर पुजाय बहुरि नांदीमुख कीनौं कुल व्यौहार। नामकरन पुनि कियौ गर्ग मुनि शुभ ग्रहलग्न विचार ॥ ७ ॥ कामधेनु सम दईहैं द्विजनकौं विधिसौं धेनु अपार। औरनकौं पाटंबर अंबर ह्वै गये भवन भंडार ॥ ८ ॥ ढाढ़ी भाट बिरध गोपनके करत जो यश उच्चार। विप्र असीस देत चिरजीयौ महरि मनोहर बार ॥९॥ काँवरि कंध धरें अति हरखत सुनि आये सब ग्वार। हरदी दूध दह्यौ बरखावत मानौं घन भादौं धार ॥ १० ॥ गोरस कीच मची ब्रज बीथिनि दूध दही बहे खार। सगबगे बसन नंद मिलि ग्वालन नाचत झूमत तार ॥ ११ ॥ नाचत नंद थोंदि हालत है आनँद उर न संभार। हँसिहँसि ग्वाल बालन गहे फैंटा अभरन लिये उतारि ॥१२॥ दुंदुभी शब्द किये नभ सुरनर मुनि उचरत जयजयकार। नाचत सनक सनंदन नारद चतुरानन त्रिपुरारि ॥१३॥ रिद्धि सिद्धि दीनी जो जाँची श्रीब्रजराज उदार। दामोदर बलि राम कृष्णाकौ दरसन प्रान अधार ॥१४॥ ३ ॥

(९८) बधावौ ब्रजराजकैं गावौ सखि मंगलचार ॥ध्रु०॥

रानी जसुमति कूखि चन्द्रमा प्रगट्यौ पूरन कला प्रकास। सुधा वृष्टि ब्रजजन शीतल किये त्रिविध ताप तन नास ॥१॥ कुमुद कलीसी फूली जुवती नंद भवनमें आई। प्रमुदित नैन चकोर बदन लखि आनँद उर न समाई ॥ २ ॥ रीझी प्रान करति नौछावरि छिनुछिनु लेत बलाय। फूले ब्रजजन बदत न काहू मानौं रंक निधि पाय ॥३॥ जुवतिनकौं पहरावत नयेनये भूषन बसन अमोल। ब्रजरानी लगि पाँय सबनके हँसिहँसि देत तंबोल ॥४॥ पहरे गोप ओप पट भूषन उपमा बरनी न जाय। कविजन कहत लजात निरखि सुख मानौं लोकके राय ॥५॥ मागध सूत विप्र बंदीजन आवत ब्रजपति धाम। ढाढ़ी भाट बिरध गोपन के लैलै बोलत नाम ॥ ६ ॥ देत तिन्हें गोगज बसन कंचन मणि मुक्तादान। मान करि नंद सबनकौं पूरे मनके काम ॥७॥

कंचन मणिमय बने झरोखा हीरा लगे अपार।
निरखि सदन छबि निधिपति सुरपति लजत कोटि शत मार ॥ ८ ॥
भवन चतुर्दश तीन लोक आनंद रह्यौ जहाँ तहाँ छाय। दामोदर बलि
रामकृष्णकौ रहसि बधायौ गाय ॥ ९ ॥ ४ ॥

(19)

आज बधायौ
नंदरायकैं गोपी गावैं मंगलचार ॥ध्रु०॥ आई जो मंगल कलश लैकैं
ता ऊपर फूल डार। अक्षत रोचन दूब लै चली विविध फूल भरि
थार ॥ १ ॥ घरघरतें गावति चलीं ब्रजजन झुंड अपार। चलीं सबै
मिलि महरिके घर देखन नंदकुमार ॥ २ ॥ देख मोहन आसपूरी
सबै देत असीस। नंदमहरकौ लाड़िलौ चिरजीयौ कोटि बरीस ॥३॥
महरि दानजो बोहोत दीयौ और दियौ नंदराय। ऐसौ सुख देखौ सदा
जन सूरदास बलि जाय ॥४॥ ५ ॥

(20)

कौन सुकृत इन ब्रजबा-
सिनकौ बदत विरंचि शिव शेष। श्रीहरि जिनके हेत प्रगटे मानुष वेष
॥ ध्रु० ॥ जोति रूप जगधाम जगतगुरु जगतपिता जगदीश। योग
यज्ञ जप तप व्रत दुर्लभ सो गृह गोकुल ईश ॥१॥ एक एक रोम कूप
विराट सम अनंत कोटि ब्रह्मांड। लिये उछंग बाहि तात यशोदा अपने
निज भुजदंड ॥ २ ॥ जाके उदर लोक त्रय जल थल पंच तत्व
चहुँखान। बालक होई झूलत ब्रजपलना जसुमति भवन निधान ॥३॥
अनुदिन श्रवण सुधारस पंचम चिंतामणिसी धैन। सो तजि जसुमतिकौ
पय पीवत भक्तनकौं सुखदैन ॥४॥ करन हरन प्रभु दाता भुक्ता विश्वंभर जगजानि। ताहि लगाय माखनकी चोरी बाँध्यौ है नँदरानि ॥५॥
रवि शशि कोटि कला सम लोचन त्रिविध तिमिर मिटि जात।
अंजन देत हेत सुतके चक्षु लै कर काजर मात ॥६॥ कमला नायक
बैकुंठ दायक दुखसुख जाके हाथ। काँधे कामरि करलकुट नग्न पद
बन बछरनके साथ ॥७॥ वेद वेदांत उपनिषद षटरस अरपत भुक्त

नाँहि। गोप ग्वालनकी मंडली मोहन हँसिहँसि जूठनि खाँहि ॥८॥
क्षिति नापी तृपद करुनामय बलि छल दियौ पतार। देहरी उलंघ
सकत नहीं सो प्रभु खेलत नंददुवार ॥९॥ बकी बकासुर शकट तृणा-
वर्त अघ धेनुक वृषभास। कंस केसी को यह गति दीनी राखे चरन
निवास ॥१०॥ भक्तवत्सल प्रभु पतित उधारन रहे सकल भरपूर। मारग
㉑ रोकि पर्यौ हट द्वारें पतित सिरोमणि सूर ॥ ११ ॥ ॥ हेरी
हेरीरे भैया हेरी हेरीरे ॥ध्रु०॥ सकल काज पूरन भये नैनन देखे आज।
रानी जसुमति ढोटा जायौ आयौ ब्रजमें राज ॥ १ ॥ उपनंद कहैं
नंदसों मेरे मनकौ भाव। उठि किन बाबा नाचहू आज भलौ बन्यौ है
दाव ॥ २ ॥ नाचनकों बाबा उठे संगलिये बड़े ग्वाल। मलकत थोंदा
हालही निरखि हँसीं ब्रजबाल ॥ ३ ॥ उपनंद कहे तब नंदसों गैया
सकल मँगाई। नांदीमुख पूजा करें सब विप्रन दई बुलाई ॥ ४ ॥
बहोत भाँति बस्तर दिये जैसो जाकौ लाग। काहूकौं पटुका दिये काहू
दीनी पाग ॥ ५ ॥ काहूकौं चादरि दई काहू दीनी खोर। काहूकौं
दुपटा दिये करि करि पीरे छोर ॥६॥ काहूकों झगुला दिये काहू दई
कबाइ। काहू दीनी पावरी सब बागे दिये बनाइ ॥ ७ ॥ माधौ ग्वाल
सबसों कहे सुबस बसौ ब्रजवास। श्रीजसुमतिजू के लाड़िले हम
कबहूँ न छाँड़े पास ॥८॥

22

राग जैजैवंती ॥ ॥ माई

आजतो गोकुलगाम कैसो रह्यौ फूलकैं। गृह फूले दीसे जैसे संपति समूलकैं ॥१॥ फूलीफूली घटा आई घरहर घूमकैं। फूली फूली बरखा होत झर लायौ झूमकैं ॥ २ ॥ फूल्यौ फूल्यौ पुत्र देखि लियौ उर लूमिकैं। फूली है यशोदा माय ढोटा मुख चूमिकैं ॥३॥ देवता आगिन फूले घृत खाँड़ होमिकैं। फूल्यौ दीसे दधिकाँदो ऊपर सो भूमिकैं ॥ ४ ॥ मालिन बाँधे बंदनमाला घरघर डोलकैं। पाटंबर पहराय अधिके अमोलकैं ॥५॥ फूले हैं भंडार सब द्वारे दीये खोलिकैं। नंदराय देत फूले नंददास बोलिकैं ॥६॥

नाधी
23

४ राग नाइकी ॥ आनंद बधावनो नंद महरजूके धाम। बड़भागिन जसुमति जायो है कमलनैन घनश्याम ॥१॥ बजत निशान मृदंग ढोलरव मंगल गावत गावत बाम देत दान कंचन मणि भूषण धेनु बसन लै लै नाम ॥ २ ॥ देत असीस सकल गोपीजन ब्रज जन मन अभिराम ॥ हरिनारायन श्यामदासके प्रभु माई प्रगटे हैं पूजन काम ॥३॥

नाधी
24

१ ॥ जन्मलियौ शुभ लगन बिचार। कृष्णपक्ष भादौं निशि आठैं नक्षत्र रोहिनी और बुधवार ॥१॥ शंख चक्र गदा पद्म बिराजत कुंड मनि उजियार। मुदित भये वसुदेव देवकी परमानंद दास बलिहार ॥ २ ॥

नाधी
25

२ ॥ फूले गोप ग्वाल नंदराय। ब्रजनारी घर घर तैं आई प्रफुलित आनँद उर न समाय ॥१॥ जा कारण सब निकट बुलाये देत दान कंचन मनि गाय। करत बेद ध्वनि ब्रजपति आगे सूर निरखि परम सुख पाय ॥२॥

नाधी।
26

३ ॥ शुभ दिन मंगल आज नीकौ। रानी जसोमति ढोटा जायौ सोहत श्री ब्रजकुलकौ टीकौ ॥१॥ मिलि ब्रजनारि कहत चिरजीयौ बल्लभ सुवन भावतौ जी कौ। बृंदाबन ससिकौ मुख निरखत सुख त्रिभुवनकौ लागत फीकौ ॥ २ ॥

(२४) ગાયકી

४ ॥ भई मेरे मनकी बातजु माई ॥

आज रैंनि सपनौ भयौ मोकौं नंदके घर चली आई ॥ १ ॥ हरद दूब कुमकुम दधि अक्षत दधि कुमकुम गोरससौं नाई। मोकौं जसुमति बहोत पहराई कहा बरनौं जु बड़ाई ॥ २ ॥ इक पलना पर पौढ्यौ है बालक मोतिन झूमक लाई। ब्रजनारी घरघर तैं आई लालकी लेत बलाई ॥ ३ ॥ घरघर चौक पूरत मिलि भामिनि बंदनबार बँधाई। ग्वाल बाल सब देत बधाई रतनन भूमि सब छाई ॥ ४ ॥ जागि परीचितयौ महरानौ कान्ह कुँवर दरसाई। रसिक प्रीतम या सुखके कारन आयौ ब्रजमें माई ॥५॥

(२५)

३ ॥ राग कान्हरौ ॥

॥ऐसौ पूत देवकी जायौ। चारयौं भुजा चारि आयुध धरे कंस निकंदन आयौ ॥ १ ॥ भरि भादौं आधीराति अष्टमी देवकी कंत जगायौ॥ देख्यौ मुख वसुदेव कुँवरकौ फूल्यौ अंग न समायौ॥ २ ॥ अब ले जाहु बेगि इहि गोकुल बहोत भाँति समुझायौ॥ हृदय लगाय चूमि हरिकौ मुख पलनामें पौढ़ायौ ॥ ३ ॥ तब वसुदेव लियौ कर पलना अपने सीस चढ़ायौ ॥ तारे खुले पहरुवा सोये जाग्यौ कोऊ न जगायौ ॥ ४ ॥ आगे सिंघ शेष ता पाछैं नीर नासिका आयौ ॥ हूँक देत बलि मारग दीनौ तब तरवन जल आयौ ॥ ५ ॥ नंद यशोदा सुनौं वीनती सुत जनि जानि परायौ॥ जसुमति कहै जाउ घर अपने कन्या लै घर आयौ॥ ६ ॥ प्रात भयौ भगनीके मंदिर प्रोहित कंस पठायौ॥ कन्या भई कूखि देवकीकैं सखियन शब्द सुनायौ ॥७॥ कन्या नाम सुन्यौं जब राजा पापी मन न पत्यायौ॥ क्रोध उपाय कंस मन काँप्यौ राजा बहोत रिसायौ॥८॥ कन्या मँगाय लई राजानैं धोबी पटकन आयौ भुजा उखारि लै गई उरते राजा मन बिलखायौ ॥९॥ बेदहू कह्यौ स्मृतिहू भाख्यौ सो डर मनमें आयौ॥ सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे भयौ भक्तन मन भायौ ॥१०॥

(२७) [illegible]

१ ॥ भादौंकी अति रैनि अँध्यारी। द्वार कपाट बाट भट रोके दिश दिश कंत कंस भय भारी ॥१॥ गरजत गगन महा डर लागत बीच बहै यमुना कारी। तातैं यह सोच जिय आवत क्यौं दुरिहैं शशिवदन उजारी ॥२॥ तब पति बोलि वचन करि राखी वर काहै न ताहि दिन मारी। देखौ धौं ऐसौ सुत बिछुरत कहौ कैसे जीवै महतारी ॥३॥ सुनिसुनि दीन वचन देवकीके दीनबंधु भक्तन भयहारी। कटि गये। निगड़ उघरि गये गोपुर सूर सुमंघवा वृष्टि निवारी ॥ ४ ॥

[illegible]

(२८) ॥ २ ॥ अँधियारी भादौंकी राति। बालक और वसुदेव देवकी पड़े पड़े पछितात ॥१॥ बीच नदी घन गरजत बरखत दामिनि आवत जात। बैठत उठत सेज सोवरिमें कंस डरन अकुलात ॥ २ ॥ गोकुल बाजे बजत बधाई सुनि कंनहेर सिहात। सूरदास आनंद नंदकैं देत कनिक नगदात ॥ ३ ॥

(२९) ॥ ३ ॥ आठैं भादौंकी अँधियारी। गरजत गगन दामिनी कौंधति गोकुल चले मुरारि ॥ १ ॥ शेष सहस्र फन बूँद निवारत सेत छत्र शिर तान्यौ। वसुदेव अंक मध्य जगजीवन कहा करैगौ पान्यौ ॥ २ ॥ यमुना थाह भई तिहिं औसर आवत जात न जान्यौ। परमानंददासको ठाकुर देव मुनिन मन मान्यौ ॥ ३ ॥

(३०) ॥ ४ ॥ भादौंकी रैनि अँधियारी। शंख चक्र गदा पद्म बिराजत मथुरा जन्म लियौ बनवारी ॥ १ ॥ बोलि लिये वसुदेव देवकी बालक भयौ परम रुचिकारी। तुम लै जाहु बेगि इहि गोकुल अधम कंसको मोहि डर भारी ॥ २ ॥ सोवत स्वान पहरुवा चहुँदिस खुले कपाट गये व्है न्यारी। पाछें सिंघ डहारत हूँकत आगें है कालिंदी भारी ॥३॥ तब जिय सोच करत ठाढ़े व्है अविधि कहा विधाता ठानी। कमलनैनको जानि महातम जमुना भई तरवन तर पानी ॥४॥ पोहोंचे हैं गृह नंदगोपके जिनकी सकल आपदा टारी। गोविंदप्रभु बड़भाग यशोदा प्रगटे हैं गोवर्धनधारी ॥५॥

॥ ५ ॥ प्यारे हरिकौ विमल यश गावत गोपांगना। मनिमय आँगन नंदरा-

यके बालगोपाल करैं जहाँ रिंगना ॥ १ ॥ गिरि गिरि उठत घुटुरुवन टेकत जानुं पाणि मेरो छगनकौ मगना । धूसर धूरि उठाइ गोद लै मात यशोदाके प्रेमको भाग्यना ॥२॥ त्रिपद भूमि मापी न आलस भयौ अब जो कठिन भयौ देहरी उलंघना । परमानंदप्रभु भक्तवत्सल हरि रुचिर हार कंठ सोहे बघनखना ॥ ३ ॥ ६ ॥ गावत गोपी मधु मृदुबानी । जाके भवन बसत त्रिभुवनपति राजा नंद यशोदारानी ॥ १ ॥ गावत वेद भारती गावत नारदादि मुनिज्ञानी । गावत गुन गंधर्व काल शिव गोकुलनाथ महातम जानी ॥ २ ॥ गावत चतुरानन जगनायक गावत शेष सहस्र मुखरास । मन क्रम वचन प्रीति पद अंबुज अब गावत परमानंददास ॥ ३ ॥ ७ ॥ ❀धन्यरानी जसुमति गृह आवत गोपीजन । बांसर ताप निवारन कारन बारंबार कमल मुख निरखन ॥१॥ चाहत पकर देहरी उलंघन किलकि किलकि हुलसत मनहीं मन । राई लोन उतारि दुहूँकर बारि फेरि डारत तनमन धन ॥२॥ लाल लेत उछंग चाँपत हियौ भरि प्रेम बिवस लागे द्रग ढरकन । लै चली पलना पौढ़ावनकौं अरकसाय पौढ़े सुंदरघन ॥ ३ ॥ देत असीस सकल गोपीजन चिरजीयौ लाल जौं लौं गंग जमन । परमानंददासको ठाकुर भक्तवत्सल भक्तन मनरंजन ॥४॥ ८॥

Slo321 //
㉛

Slo321 //
㉜

Slo321 //
㉝

Slo321 //
㉞

❀ यहधन धर्महीं तैं पायौ । नीके राखि यशोदामैया नारायण ब्रज आयौ ॥ १ ॥ जाधनकौं मुनि जप तप खोजत बेदहू पार न पायौ । सो धन धर्यो क्षीरसागरमें ब्रह्मा जाय जगायौ ॥ २ ॥ जाधनतें गोकुल सुख लहियत सगरे काज सवारें॥सो धन बारबार उर अंतर परमानंद बिचारे॥ ३ ॥ ९ ॥=हरिजनमतहीं आनंद भयौ ॥ नवविधि प्रगट भई नँदद्वारें सब दुख दूरि गयौ ॥१॥ वसुदेव देवकी मतौ उपायौ पलना बाँस लयौ । कमलाकंत दियौ हुंकारो यमुना पार दयौ ॥२॥ नंदजसोदाके मन आनंद गर्ग बुलाय लयौ । परमानंददासकौ

सोहला (३४) ठाकुर गोकुल प्रकट भयौ ॥ ३ ॥ १० ॥ अहो विप्र सो उपाय
कछु कीजै। जा उपायतैं या बालककों राखि कंसते लीजै ॥ १ ॥ मनसा
वाचा कहत कर्मना नृपको कौन पतीजै ॥ छलबलकरि उपाय कैसे हूँ
काढ़ि अनतही दीजै ॥ नाँहि ऐसौ भागि हमारौ सुख लोचन
पुट पीजै ॥ सूरदास ऐसे सुतको यश श्रवनन सुनिसुनि जीजै ॥ ३ ॥
सोहला (३५) ११ ॥ रानीजू तिहारौ घर सुबस बसौ ॥ सुनिरी यशोदा या
ढोटाकौं न्हांतही जिन बार खसौ ॥१॥ कोऊ करत बेद ध्वनि मंगल
कोऊ अति आनंद लसौ ॥ निरखि निरखि मुखकमलनैनको आनँद
प्रेम हिये हुलसौ ॥२॥ देतअसीस सकल गोपीजन कोउ गावौ कोऊ
विहसौ ॥ परमानंद नंदघर आनँद पुत्र जन्म भयौ जगत जसौ ॥३॥
सोहला (३६) १२ ॥ भई मेरे मनकी बात जो माई। आज रैंन सपनौं
भयौ मोकौं नंदके घर चलि आई ॥ १ ॥ हरददूब अक्षत दधिकुंकुम
गोरससौं अन्हाई। जसुमति मोकौं बहु पहराई कहा बरनौं जो बड़ाई
॥ २ ॥ इक पलनापर पौढ़्यौ बालक मोतिन झूमक लाई। ब्रजनारी
घरघरतैं आई लालकी लेत बलाई ॥ ३ ॥ घरघर चौक पूरति ब्रजभामिनि
बंदनबार बँधाई। ग्वालबाल सब देत बधाई रतन भूमि छबि छाई
॥ ४ ॥ जागिपरी चितयौ महारानौं कान्ह कुँवर दरसाई। रसिक
सोहला प्रीतम या सुखके कारन आयौ ब्रजमें माई ॥ ५ ॥ १३ ॥
(३७) सबते श्रीनंदराय बड़भागी। प्रकटे पुत्र मनोहर जिनके कीरति जगमें
जागी ॥ १ ॥ दये कनिक मनि दान अचल तिन दूजौ न ऐसौ त्यागी।
परमानंद बसौं गोकुलमें फिरि कमला पग लागी ॥ २ ॥ हिरदे दूध
दह्यौ लपटावत भये वल्लभ अनुरागी। श्रीविट्ठलगिरिधारि कृपानिधि
(३८) लीला प्रेम सौं पागी ॥ १४ ॥ मिलि मिलि गुंजत आँगनन
बधाई। घर घर नाचत छिरकि दूध दधि मंगल भये सबन मन भाई
॥ १ ॥ मानसरोवर हंस ज्यौं राजत विप्रन दान देनकौं अघाई।
गोविंदप्रभुकी उपमा कहा कहौं तीन लोक कीरति गाई ॥२॥

(70) [illegible]

५ ॥ राग बिहाग रावलके
कहैं गोप आज ब्रज धुनी ओप कान दै दै सुनौ बाजे गोकुल
मँदिलरा। जसोदाकें पूत भयौ वृषभानजूसौं कह्यौ गोपी ग्वाल लै लै
धाये दूध दधि गगरा ॥१॥ आगे गोपवृंद वर पाछे त्रिय मनोहर
चल न सकत कोऊ पावत न डगरा। चतुर्भुजप्रभु गिरिधारीकौ जन्म
सुनि फूल्यौ फूल्यौ फिरत नारद जैसे भँवरा ॥ २ ॥

[illegible]
(71) २ ॥ आनँद तिहिं काल प्रगटे हरि आयौ। देखि
दंपति अद्भुत सुतकौं अति विस्मय मन पायौ ॥१॥ मोर मुकुट पीतांबर
पहिरे चार भुजा दरसायौ। शंखगदादि बिराज उदायुध उभय स्तुति
गुन गायौ ॥ २ ॥ फिर चित आई ऐसें प्रभुकौं कंस दुष्ट दुरें लागे।
प्रभु आसय लै चले नंदघर चौकी कोउ न जागे ॥३॥ बालक द्वै भुज
सुवाइ वसुदेव गमन जब कीनौ। कपाट पौरिया सोये सेस छत्र कर
लीनौ ॥ ४ ॥ जमुना आवत पंथ दियौ गोकुल पहुँचे आई। माया
लई उठाय गोद श्रीकृष्ण तहाँ पधराई ॥ ५ ॥ लै आये माया मथुरामें
मोहिनी रौंवन लागी। कह्यौ पौरिया जाय कंससौं बालक भयौ सुभागी
॥ ६ ॥ कंस आय देखि कन्या यौं याहि कहा हौं मारौं। को जानै
जु दैवगति कैसी सिलापै जाय पछारौं ॥७॥ पटकत अष्ट भुजा ह्वै नभते
बानी यहै सुनाई। द्वारकेस प्रभु प्रगट भये ब्रज तोहि मारिवे
आई ॥८॥ ३ ॥ आँगन दधिकौ उदधि भयौ। गौ ग्वाल फिरत
महरानें सकल संताप गयौ ॥१॥ बकसत पाग पिछौरा ग्वालन सर्वसु
सबन दियौ। धन्य धन्य जसुमति रानी धौंधी प्रभु जनम लियौ॥२॥

(72) बिहाग

बिहाग.

१ ॥ श्रवन सुनि सजनी बाजे मँदिलरा। आज निशि लागत परम सुहाई। अति आवेश होत तन मनमें श्रीगोकुल बजत बधाई ॥१॥ दै दै कान सुनत अरु फूलत रावलके नरनारी। नँदरानी ढोटा जायौ है होत कुलाहल भारी॥ २ ॥ अति ऊँचे चढ़ि टेर सुनावत पसरि उठे जे ग्वाल। गैयाहो बगदाबौरे मैया भयौ नदकैं लाल ॥ ३ ॥ आनँदभरि अकुलाय चलीं सब सहज सुंदरी गोपी। प्रादुर्भाव यशोदा सुतकौ तामैं तनमन ओपी ॥ ४ ॥ चंचल साज सिंगार चंदमुखी चंचल कुंडल हारा। हाथन कंचन थार बिराजत पग नूपुर झनकारा॥५॥ बरखत कंच कुसुमन शोभित गली दरश चौंप जिय भाई। गावत गीत पुनीत करत जग जसुमति मंदिर आई ॥ ६ ॥ धन्य दिन धन्य यह राति आजकी धन्य धन्य यह सब गोरी। श्याम सुंदर चंदै निरखत मानौं अखियाँ त्रिखित चकोरी ॥७॥ शोभा जुत आई कीरति अपने गृह मानि बधाये। याचक जन धन घन ज्यौं बरखत भान गोप तहँ आये ॥८॥ आय जुरे सब गोप ओपसौं भयौ जो मनकौ भायौ। पंचामृत सीसनतैं ढारत नाचत नंद नचायौ ॥९॥ नाचत ग्वाल बाल रसभीने हरद दही भरि राजैं इत निशान उत भेरि दुंदुभी हरखि परस्पर बाजैं ॥ १०॥ खग मृग द्रुम दिशि दिशि भवननमें देखियत हैं सरसाने। प्राननके आयें इंद्री ज्यौं यों ब्रजजन हुलसाने ॥ ११ ॥ ध्वजा वंदनमालालंकृत नंद भवनमें सोहै। व्यौम विमानन भीर भई लखि अमरनकौ मन मोहै ॥ १२ ॥ महाराज ब्रजराज नंदपै जो माँग्यौ सो पायौ। जाकैं ऐसौ पूत भयौ ताकौ न्यांय जगत यश छायौ॥१३॥ जिनकौ सुख सुमिरत ब्रह्मादिक यौं हुलसै ब्रज गेही। कहि भगवान हित रामराय प्रभु प्रगटे प्रानसनेही॥ १४ ॥

જ્યારે જાગરણ પૂરી તે પૂર્વમાં કીર્તન થાય અને ૧૨–૩૯ મિનિટે શ્રીમદ્ ભાગવત દશમ સ્કંધના ત્રીજા અધ્યાયના—

“ અથ સર્વગુણોપેતઃ કાલઃ પરમશોભનઃ ।
યર્હ્યેવાજનજન્મર્ક્ષં શાન્તર્ક્ષગ્રહતારકમ્ ॥ ૧ ॥
દિશઃ પ્રસેદુર્ગગનં નિર્મલોડુગણોદયમ્ ।
મહીમંડલભૂયિષ્ઠપુરગ્રામવ્રજાકરા ॥ ૨ ॥
નદ્યઃ પ્રસન્નસલિલા હ્રદા જલરુહશ્રિયઃ ।
દ્વિજાલિકુલસંનાદસ્તબકા વનરાજયઃ ॥ ૩ ॥
વવૌ વાયુઃ સુખસ્પર્શઃ પુણ્યગન્ધવહઃ શુચિઃ ।
અગ્નયશ્ચ દ્વિજાતીનાં શાન્તાસ્તત્ર સમિન્ધત ॥૪॥
મનાંસ્યાસન્ પ્રસન્નાનિ સાધુનામસુરદ્રુહામ્ ।
જાયમાને જને તસ્મિન્ નેદુર્દુન્દુભયો દિવિ ॥ ૫ ॥
જગુઃ કિન્નરગન્ધર્વાસ્તુષ્ટુવુઃ સિદ્ધચારણાઃ ।
વિદ્યાધર્યશ્ચ નનૃતુરપ્સરોભિઃ સમં તદા ॥ ૬ ॥

મુમુચુર્મુનયો દેવાઃ સુમનાંસિ મુદાન્વિતાઃ ।
મન્દં મન્દં જલધરા જગર્જુરનુસાગરમ્ ॥ ૭ ॥
નિશીથે તમઉદ્ભૂતે જાયમાને જનાર્દને ।
દેવક્યાં દેવરૂપિણ્યાં વિષ્ણુઃ સર્વગુહાશયઃ ॥ ૮ ॥
આવિરાસીદ્યથા પ્રાચ્યાં દિશીન્દુરિવ પુષ્કલઃ ।

એ સાડા આઠ શ્લોક બોલી ભગવાનના પ્રાકટ્યની ભાવના કરી દર્શન ખોલવાં. અને શ્રી શાલિગ્રામજીને કે શ્રી બાલકૃષ્ણલાલજીને પંચામૃત સ્નાન, અભ્યંગ વગેરે કરવાં.

આવ્યા શ્રી ગોકુળ તારવા ①

આવ્યા શ્રી ગોકુલ તારવા,
છબીલો લાલ આવ્યા શ્રી ગોકુલ તારવા.
વસુદેવ દેવકીને ઘેર જનમ ધર્યો છે,
નંદજીના ગૌધેન ચારવા– છબીલો. ૧
માશી પૂતનાના વ્હાલા પ્રાણુ જ શોષવા,
મામા તે કંસને મારવા– છબીલો. ૨

ટચલી આંગળીએ વ્હાલા ગોવરધન તોળવા,
ઇન્દ્રના માન ઉતારવા– છબીલો. ૩
વૃદા તે વનની કુંજ ગલનમાં,
ગોપીઓને રસ રમાડવા– છબીલો. ૪
'વલ્લભ'ના સ્વામી પ્રભુ રસિક શિરોમણી,
ભૂમિનો ભાર ઉતારવા– છબીલો. ૫

શ્રીકૃષ્ણજન્મ વધાઈ ②

(ધોળ)

શ્રીકૃષ્ણ કમળ મુખ નીરખવા ચાલો શ્રીનંદજીને ઘેર રે,
જશોદાએ શ્રીકૃષ્ણ જન્મીઆ, હરખિયા નંદજી મહેર રે. ૧
ચૌદ ભુવન કેરાં ભૂષણાં, નંદ સુત શ્રી ગોકુલ આવ્યા રે,
ફુલી ફરે વ્રજ સુંદરી ગોપી, ગોવાળને મન ભાવ્યાં રે. ૨
ગોપિકા સર્વ ટોળે મળી, હરિને વધાવાને જાય રે,
અંતર ઘટ ઉતાવળા, હરિને જોવાની અપેક્ષાય રે. ૩
પુન્ય પવિત્ર પ્રભુજી તણાં, ગાય છે નૌતમ ગીત રે,
ગીત ગાયે ને સ્વર સોહાયે, થયાં છે એકાગ્ર ચિત્ત રે. ૪
ભેટ લાવ્યાં બહુ ભામિની, ચાંદલો લાલાને કીજે રે,
હરખતાં નીરખતાં પ્રીતશું, મોહનને ઉછંગે લીજે રે. ૫
ભીડ થઈ ઘર આંગણે, નંદ જશોદાને મન ભાવ્યાં રે,
વ્રજ ભૂમિનાં સુખ શાં કહું, નાથને મોતીડે વધાવ્યાં રે. ૬
માધવદાસના પ્રભુજી, પરિવાર સ્થિર કરીને સ્થાપો રે,
દાસ ઉપર દયા કરીને, વાસ તે વ્રજ માંહે આપો રે. ૭

જન્માષ્ટમી ની વધાઈ

॥ રાગ દેવગંધાર ॥
વ્રજ ભયો મહરિકેં પૂત જબ યહ બાત સુની ॥ સુનિ આનંદે સબ લોગ ગોકુલ ગણિત ગુની ॥
વ્રજ પૂરબ પૂરે પુન્ય રુપી કુલ સુધિર થુની ॥ ગ્રહ લગ્ન નક્ષત્ર બલિ સોધિ કીની વેદ ધુની ॥૧॥
સુનિ ધાઈ સબ વ્રજનારિ સહજ સિંગાર કિયેં ॥ તન પહરેં નૌતન ચીર કાજર નૈન દિયેં ॥
કસિ કંચુકિ તિલક લિલાટ શોભિત હાર હિયેં કર કંકણ કંચન થાર મંગલ સાજ લિયેં ॥૨॥
વે અપનેં અપનેં મેલ નિકસી ભાંતિ ભલી ॥ માનોં લાલ મુનિનકી પાંતિ પિંજરન ચૂર ચલી ॥
વે ગાવેં મંગલગીત મિલિ દસ પાંચ અલી ॥ મોનોં ભોર ભયૌ રવિ દેખિ ફૂલી કમલ કલી ॥૩॥
ઉર ચંચલ ઉડત ન જાન્યૌ સારી સુરંગ સુહી ॥ મુખ માંડયો રોરી રંગ સેંદુર માંગ છુહી ॥
શ્રમ શ્રવનન તરલ તરૌના બેની શિથિલ ગુહી ॥ શિર બરષત કુસુમ સુદેશ માનો મેઘ ફુહી ॥૪॥
પીય પહલેં પૌહોંચી જાય અતિ આનંદ ભરી ॥ લઈ ભીતર ભવન બુલાય સબ શિશુ પાંય પરી ॥
એક બદન ઉધારી નિહારત દેત અસીસ ખરી ॥ ચિરજીયૌ યશોદાનંદ પૂરન કામ કરી ॥૫॥
ધન્ય ધન્ય દિવસ ધન્ય રાત્ર ધન્ય યહ પહર ઘરી ॥ ધન્ય ધન્ય મહરિજૂકી કૂંખ ભાગિ સુહાગ ભરી ॥
જિન જાયો અસૌ પૂત સબ સુખ ફલન ફરી ॥ થિર થાપ્યો સબ પરિવાર મનકી શૂલ હરી ॥૬॥
સુનિ ગ્વાલન ગાય બહોરિ બાલક બોલિ લિયે ॥ ગુહિ ગુંજા ઘસિ વમધાતુ અંગ અંગ ચિત્ર ઠયે ॥
શિર દધિ માખનકે માંટ ગાવત ગીત નયે ॥ સંગ ઝાંઝ મૃદંગ બજાવત સબ નંદ ભવન ગયે ॥૭॥
એક નાચત કરત કુલાહલ છિરકત હરદ દહી ॥ મનોં બરખત ભાદોંમાસ નદી ઘૃત દૂધ બહી ॥
જાકો જહી જહી ચિત્ત જાય કૌતક તહી તહી ॥ રસ આનંદ મગન ગુવાલ કાહૂ બદન નહી ॥૮॥
એક ધાય નંદજૂપૈ જાય પુનિ પુનિ પાંય પરૈં ॥ એક આપ આપુહિં માંઝ હંસિ હંસિ અંક ભરૈં ॥
એક અંબર સબહી ઉતારિ દેત નિશંક ખરૈ ॥ એક દધિરોચન ઓર દૂબ સબનકે શીશ ધરૈં ॥૯॥
તબ નંદ ન્હાય ભયે ઠાડે અરુ કુશ હાથ ધરૈં ॥ નાંદીમુખ પિતર પુજાય અંતર સોચ હરૈં ॥
ઘસિ ચંદન ચારુ મંગાય વિપ્રન તિલક કરૈં ॥ વર ગુરુજન દ્વિજન પહરાય સબનકે પાંય પરૈં ॥૧૦॥
ગન ગૈયા ગિની ન જાય તરુન સુબચ્છ બઢી ॥ નિત ચરૈ જમુનાજૂકે કાછ દૂને દૂધ ચઢી ॥
ખુર રુપે તાંબે પીઠ સોને સીગ મઢી ॥ તે દીની દ્વિજન અનેક હરખિ અસીસ પઢી ॥૧૧॥
તબ અપને મિત્ર સુબંધુ હંસિ હંસિ બોલિ લિયે ॥ મથિ મૃગમદ મલય કપૂર માથેં તિલક કિયે ॥
ઉર મણિમાલા પહરાય બસન વિચિત્ર દિયે ॥ માનોં બરષત માસ અષાઢ દાદુર મોર જિયે ॥૧૨॥
વર બંદી માગધ સૂત આંગન ભવન ભરૈ ॥ તે બોલૈ લૈ લૈ નામ હિત કોઉ ના બિસરૈ ॥
જિન જો જાંચ્યૌ સો દીની રસ નંદરાય ઢરૈ ॥ અતિ દાન માન પરધાન પૂરન કામ કરૈ ॥૧૩॥
તબ રોહિની અંબર મંગાય સારી સુરંગ ઘની ॥ તે દીન બધૂન બુલાય જૈસી જાય બની ॥
વે અતિ આનંદિત બહોરિ નિજ ગૃહ ગોપ ધની ॥ મિલિ નિકસી દેત અસીસ રુચિ અપુની અપુની ॥૧૪॥
તબ ઘરઘર ભેરિ મૃદંગ પટહ નિસાન બજે ॥ વર બાંધી વંદનમાલ અરુ દ્વજ કલશ સજે ॥
તબ તા દિનતેં વે લોગ સુખ સંપતિ ન તજેં ॥ સુનિ સૂર સબનકી યહ ગતિ જે હરિ ચરન ભજે ॥૧૫॥

॥ રાગ દેવગંધાર ॥
સાવરો મંગલ રુપ નિધાન ॥
જા દિનતેં હરિ ગોકુલ પ્રગટે દિન દિન હોત કલ્યાન ॥૧॥
બૈઠી રહોં શ્યામ ગુન સુમરોં રૈન દિના સબ યામ ॥
શ્રીભટકે પ્રભુ નૈન ભર દેખોં પીતાંબર ઘનશ્યામ ॥૨॥

॥ રાગ ભૈરવ ॥
સબ મિલિ આવૌ ગાવૌ બજાવૌ મૃદંગ આજ હમારે લાલજૂકી વરસગાંઠ ॥
કનક થાલ ભરભર મુક્તાફલ લૈ નૌછાવર કરવાવૌ ॥૧॥
નવનવ પલ્લવ વંદનમાલ દ્વારદ્વાર બંધાવન ॥
આનંદઘન પ્રભુકો જન્મ સુનતહી લાગ્યૌ સુજસ સુહાવન ॥૨॥

।। રાગ આસાવરી ।।

તુમરે ભગિ સુનૌ મેરી ગોપી ભયો એસૌ લાલ હમારેં ।।
અબ ચિરજીવૌ ભાગિ સબનકે ખેલૌ મેરે તુમ્હારૈ ।।૧।।
હોં સુખ દેખો તુમ સુખ દેખો પ્યાવો દૂધ મલ્હાવો ।।
મેરે લાલકી તુમ સબ ભાભી ઉબટિ ન્હવાય બૈઠાવો ।।૨।।
તુમ લેહુ ગોદ લગાવો છાતી મુખ ચુમો ઔર ખિલાવો ।।
શ્રીવિઠ્ઠલગિરિધરનલાલ કો ગંગા કરન સિખાવો ।।૩।।

।। રાગ સારંગ ।।

આજ મહાવન મંગલચાર ।।
પૂરનચંદ્ર પ્રગટે જસુમતિ ગૃહ ભકતન પ્રાન આધાર ।।૧।।
બજત બધાઇ અતિ મનભાઇ સુનિ આઇ વ્રજનારી ।।
ગાવતિ મંગલ ધરત સાથિયે બાંધત બંદનવાર ।।૨।।
ફૂલે ગ્વાલ કરત કુતૂહલ દેત હૈ બસન ઉતારી ।।
ઢોડા ભયૌ હૈ નંદરાયકેં નાચત સબ નરનારી ।।૩।।
દેત દાન રાય મનભાયે ભરિભરિ રતનન થાર ।।
દધિકૌ ઉદધિ ભયૌ આંગનમેં કીચ મચી સિંઘદ્વાર ।।૪।।
નિકસી દેત અસીસ સબૈ મિલી સુંદરિ પરમ ઉદાર ।।
યહ શોભા કછુ કહત ન આવે દાસ નિરખિ બલિહાર ।।૫।।

।। રાગ સારંગ ।।

એરી હે ભૈયા હો
આજ નંદરાયકે આનંદ ભયૌ ।।
નાચત ગોપી કરત કુલાહલ મંગલચાર ઠયૌ ।।૧।।
રાતી પીરી ચોલી પહરેં નૌતન ઝૂમકસારી
ચોવા ચંદન અંગ લગાયે સેંદુર માંગ સંભારી ।।૨।।
માખન દૂધ દહ્યો ભરિ ભાજન સકલ ગ્વાલ લૈ આયે ।।
બાજત બૈન પખાવજ મહુવરિ ગાવતિ ગીત સુહાયે ।।૩।।
હરદ દૂબ અક્ષત દધિ કુંકુમ આંગન બાઢી કીચ ।।
હંસત પરસ્પર પ્રેંમ મુદિત મન લાગલાગ ભુજ બીચ ।।૪।।
ચહું બેદધ્વનિ કરત મહામુનિ પંચ શબ્દ ઢમઢોલ ।।
પરમાનંદ બઢ્યો ગોકુલ મેં આનંદ હદેં કલોલ ।।૫।।

।। રાગ સારંગ ।।

આજ મહા મંગલ મહરાને ।।

પંચ શબ્દ ધ્વનિ ભીર બધાઇ ઘરઘર વે રખવાને ।।૧।।
ગ્વાલ ભરેં કાંવરિ ગોરસકી બધૂ સિંગારત બાનેં ।।
ગોપી ગોપ પરસ્પર છિરકત દધિ કે માઠ ઢરાને ।।૨।।
નામકરન જબ કિયૌ ગર્ગમુનિ નંદ દેત બહુ દાનેં ।।
પાવન જસ ગાવતિ કટહારિયા જાહિ પરમેશ્વર માને ।।૩।।

॥ રાગ સારંગ ॥

આંગન નંદકે દધિ કાંદૌ ॥
છિરકત ગોપી ગ્વાલ પરસ્પર પ્રકટે જગમેં જાદૌ ॥૧॥
દૂધલિયૌ લિયૌ ઘૃત માખન માંટ સંચૂત ॥
ઘરઘરતે સબ ગાવત આવત ભયૌ મહરકેં પૂત ॥૨॥
બાજત તૂર કરત કોલાહલ વારિવારિ દૈ દાન ॥
જીયૌ જસોદા પૂત તિહારૌ યહ ઘર સદા કલ્યાન ॥૩॥
છિરકે લોગ રંગીલે દીસેં હરદી પતિ સુવાસ ॥
મેહા આનંદ પુંજ સુમંગલ યહ બ્રજ સદા હુલાસ ॥૪॥

॥ રાગ સારંગ ॥

ગોકુલ આજ કુલાહલ માઇ ॥
ના જાનોં યહ અષ્ટ મહાસિધિ કહૌ કહાંતે આઇ ॥૧॥
બોલે નામકરકે કારન ગર્ગ વિમલ યશ ગાઇ ॥
પરમાનંદ સંતત હિત કારન ગોકુલ આયે માઇ ॥૨॥

॥ રાગ સારંગ ॥

વ્રજમેં હોત કુલાહલ ભારી ॥
આનંદમગન ગ્વાલ સબ નાચત દેત પરસ્પર તારી ॥૧॥
નંદરાયકે ભવનમેં આવત આનંદિત વ્રજનારી ॥
પુત્ર જન્મ સુનિ હરખ ભયૌ હૈ પરમાનંદ બલિહારી ॥૨॥

॥ રાગ સારંગ ॥

ઘર ઘર ગ્વાલ દેત હૈ હેરી ।
બાજત તાલ મૃદંગ બાંસુરી ઢોલ દમામા ભેરી ॥૧॥
લૂટત ઝપટન ખાત મિઠાઇ કહિ ન સકત કોઉ ફેરી ।
ઉનમદ ગ્વાલ કરત કોલાહલ વ્રજ વનિતા સબ ઘેરી ॥૨॥
દવજા પતાકા તોરનમાલા સબૈ સિંગારી સેરી ।
જય જય કૃષ્ણ કહત પરમાનંદ પ્રકટયો કંસકો વેરી ॥૩॥

॥ રાગ નટ ॥

નંદગૃહ બાજત આજ બધાઇ ॥
નાચત ગાવત કરત કુલાહલ ઉર આનંદ ન સમાઇ ॥૧॥
ગોપ સબેં મિલિ ભેટ બહુતલેં આયે અતિ અતુરાઇ ॥
સૂરદાસ મહર મનહિ મન ફૂલે અંગ ન માઇ ॥૨॥

॥ રાગ મલ્હાર ॥

હોંતૌ એક નઇ બાત સુનિ આઇ ॥
મહરિ યશોદા ઢોટા જાયૌ આંગન બજત બધાઇ ॥૧॥
કહિયે કહા કહઇ નહી આવૈ રતન ભૂમિ છબિ છાઇ ॥
નાચત વિરધ તરુન ઔર બલિક ગોરસ કીચ મચાઇ ॥૨॥
દ્વારેં ભીર ગોપ ગ્વાલનકી વરનોં કહા બડાઇ ॥
સૂરદાસ પ્રભુ અંતરયામી નંદસુવન સુખદાઇ ॥૩॥

।। રાગ જૈજૈવંતી ।।

માઈ આજતો ગોકુલગામ કૈસો રહ્યો ફુલકેં ।।
ગૃહ ફૂલે દીસે જૈસે સંપતિ સમૂલકેં ।।૧।।
ફૂલીફૂલી ઘટા આઈ ઘરહર ઘૂમકેં ।।
ફૂલી ફૂલી બરખાહોત ઝર લાયૌ ઝૂમકેં ।।૨।।
ફૂલ્યૌ ફૂલ્યૌ પુત્ર દેખિ લિયૌ ઉર લૂમિકેં ।।
ફૂલી હૈ યશોદા માય ઢોટા મુખ ચૂમિકેં ।।૩।।
દેવતા આગિન ફૂલે ઘૃત ખાંડ હોમિકેં ।।
ફૂલ્યૌ દીસૈ દધિકાંદૌ ઉપર સો ભૂમિકૈ ।।૪।।
માલિન બાંધે બંદનમાલા ઘરઘર ડોલિકૈં ।
પાટંબર પહરાય અધિકે અમોલકેં ।।૫।।
ફૂલે હૈ ભંડાર સબ દ્વારે દીયે ખોલિકેં ।।
નંદરાય દેત ફૂલે નંદદાસ બોલિકેં ।।૬।।

।। રાગ કાન્હરો ।।

ગાવત ગોપી મધુ મૃદુબાની ।।
જાકે ભવન બસત ત્રિભુવનપતિ રાજા નંદ યશોદારાની ।।૧।।
ગાવત વેદ ભારતી ગાવત નારદાદિ મુનિઝાની ।।
ગાવત ગુન ગંધર્વ કાલ શિવ ગોકુલનાથ મહાતમ જાની ।।૨।।
ગાવત ચતુરાનન જગનાયક ગાવત શેષ સહસ્ત્ર મુખરાસ ।।
મન ક્રમ વચન પ્રીતિ પદ અંબુજ અબ ગાવત પરમાનંદદાસ ।।૩।।

।। રાગ નાઈકી ।।

શુભ દિન મંગલ આજ નીકૌ ।।
રાની જસોમતિ ઢોટા જાયૌ સોહત શ્રી વ્રજકુલકૌ ટીકૌ ।।૧।।
મિલિ વ્રજનારી કહત ચિરજીયો વલ્લભ સુવન ભાવતૌજી કો ।।
વૃંદાવન સસિકૌ મુખ નિરખત સુખ ત્રિભુવનકૌ લાગત ફીકૌ ।।૨।।

।। રાગ નાઈકી ।।

સબ મિલી આઓ મંગલ ગાઓ ધુનિ ।।
અલી ભાદોં માસ સુહાયો રસબૂંદન અમીઝા લાયો વ્રજરાની ઢોટા જાયો ।।૧।।
ઘર ઘર તે ગોપી આઈ મિલિ ચાવર ચૂરો લાઈ નંદરાનીકી કૂખ સિરાઈ ।।૨।।
તિહિ બિરિયા બૂંદ સુહાઈ વ્રજકી વ્રજ-જીવનિ પાઈ તહાં બાજત વિવિધ બધાઈ ।।૩।।
આલી શ્યામ ઘન જસ ગાવે વ્રજવાસીકો અમૃત પ્યાવે વૃન્દાવન વસિબો ભાવે ।।૪।।

।। રાગ નાઈકી ।।

જસુમતિ તિહારો ઘર સુબસ સો ।।
સુનરી જસોદા તિહારે ઢોટાકો ન્હાવત હૂ જિનિ બાર ખસો ।।૧।।
કોઉ કરત મંગલ વેદ ધ્વનિ કોઉ ગાઓ કોઉ હંસો ।।
નિરખિ નિરખિ મુખ કમલનૈન કો આનંદ પ્રેમ હિયે હુલાસો ।।૨।।
દેત અસીસ સકલ ગોપીજન ચિરજીવો કોટિ બરીસો "પરમાનંદ" નંદ ઘર આનંદ પુત્ર જન્મ ભયો
જગતનસો ।।૩।।

।। રાગ બિહાગ ।।

રાવલ કહેં ગોપ આજ વ્રજ ધુનિ ઓપ કાન દૈ દૈ સુનો બાજે ગોકુલ મંદિલરા ।।
જસોદાકેં પૂત ભયો વૃષભાનજૂસોં કહ્યો ગોપી ગ્વાલ લૈ લૈ ધાયે દૂધ દધિ ગગરા ।।૧।।
આગે ગોપવૃંદ વર પાછે ત્રિય મનોહર ચલ ન સકલ કોઉ પાવત ન ડગરા ।।
ચતુર્ભુજપ્રભુ ગિરિધારીકૌ જન્મ સુનિ ફૂલ્યૌ ફૂલ્યૌ ફિરત નારદ જૈસે ભંવરા ।।૨।।

।। રાગ પૂર્વી ।।

પ્રગટયૌ આનંદકંદ ગોકુલ ગોપાલ ભયૌ આઇ નિધિ નંદકે ગૃહ અખિલ ભવનકી ।।
સજલ જલદ સ્યામ બરન સોભિત અતિ ચરન કમલ ઉપમાકૌ નાંહિન કોઉ દેઉ કવનકી ।।૧।।
છિરકત દધિ હરદ બાલ ફૂલે ફિરત ગ્વાલ સબૈ લૈ ચલી સબ દૂધ દહ્યો ભવન ભવનકી ।।
નંદદાસ બંદી જસ દ્વાર રહ્યૌ ઠાઢૌ ગાવૈ મહિમા કછુ ઉગ્ર રુચિકર માખનકી ।।૨।।

।। રાગ માલકૌંસ ।।

સબ મિલ આવો ગાવો બજાવો મૃદંગ બજાવો આજ હમારે લાલનજુકી બરસગાંઠ ।।
સાત સખી મિલ મંગલ ગાવો કનક થાર મોતિયન ચૌક પુરાવો ।।૧।।
સુઘર પંડિત બુલાવો સુભઘરી દિન લાવો આવો લાલન આવો હાર પહેરાવો ।।
જગન્નાથ પ્રભુકી કીરતિ સુન દિન દિન નોછાવર પાવો ।।૨।।

।। રાગ બિલાવત ।।

ગોકુલ ઘર ઘર હોત વધાઇ ।
ગાવતિ મંગલનારી ઘોષકી બાજે વિવિધ બ'ઇ ।।૧।।
દેત ન્યોછાવર પટભૂષન લે બંદિજન પહરાઇ ।
રામકૃષ્ણ જન્મે ગિરિધારી સબ બ્રજકે સુખદાઇ ।।૨।।

।। રાગ ધનાશ્રી ।।

સબ મિલિ મંગલ ગાવો માઇ ।
આજ લાલ કો જન્મદ્યાસ હૈ બાજત રંગ બધાઇ ।।૧।।
આંગન લીપો ચૌક પુરાવો વિપ્ર પઢન લાગે વેદ ।
કરો સિંગાર શ્યામસુંદરકો ચોવા ચંદન મેદ ।।૨।।
આનંદભરી નંદજૂકી રાની ફૂલી અંગ ન સમાઇ ।
પરમાનંદદાસ તિહી ઔસર બહોત ન્યોચ્છાવરિ પાઇ ।।૩।।

।। રાગ દેવગંધાર ।।

આજ ભલૌ દિન લાગત માઇ ।।
જાયૌ પૂત નંદજૂકી રાની આનંદ ઉર ન સમાઇ ।।૧।।
ગૃહગૃહતેં નિકસી વ્રજસુંદરિ શોભા કહી ન જાઇ ।।
ઝુંડન ગાવતિ ચલી રાયગૃહ લીયેં સંગ બધાઇ ।।૨।।
પૌઢી મહરિ લિયેં સુત અપનૌ કૈસી લગત સુહાઇ ।।
શ્રી વિઠ્ઠલગિરિધર ચિરજીયૌ જુરિ સબ દેખન આઇ ।।૩।।

।। રાગ દેવગંધાર ।।

મંગલ ગાવતિહૈં વ્રજનારી ।।
મહરિ દેહરિ ભીતર આવતિ દેખત બદન ઉઘારી ।।૧।।
નાચત ગોપ ગ્વાલ રસ ભીને ઔર નાચત નંદરાય ।।
કાહૂ ગિનત નહી ઉર અંતર વ્રજજન અતિ સુખપાય ।।૨।।

।। રાગ ધનાશ્રી ।।

જસુમતિ સુત જન્મ સુનિ ફૂલે બ્રજરાજહો ।।
બડેબૈસ પૂરન ઘર આયૌ યહ કાજહો ।।૧।।
પ્રજ ગાય સિંગારી સબ બસન ભૂષણ સાજ ।।
દેખનકોં આય જુરે ગોપી ગોપ સમાજ ।।૨।।
સગરે મિલિ નાચેં ગાવેં છાંડિ લોક લાજ ।।
દૂધ દહી માખન લૈ છિરકં કરિ ગાજ ।।૩।।
નંદ સબન દીને ધેનુ રતન બસન નાજ ।।
પ્રગટ ભયે રસિક પ્રીતમ ગોકુલ સિરતાજ ।।૪।।

।। રાગ ગોરી ।।

આજ બધાયો શ્રીવ્રજરાજકે રાનીજૂ જાયોહૈ મોહન પૂત ।।ધ્રુ૦।।
માસ ભાદો ઘોસ આઠે રોહિની બુધવાર ।।
યશોદાકી કૂખિ પ્રગટે શ્રીકૃષ્ણ લિયૌ અવતાર ।।૧।।
બહોત નારિ સુહાગ સુંદર સબૈ ઘોષકુમારી ।।
સજન પ્રીતમ નામ લૈ લૈ દેત પરસ્પર ગારી ।।૨।।
પુત્ર માનો ભયે ઘરઘર નિર્તત ઠામઠામ ।।
નંદદ્વારે ભેટ લે લે ઉમગ્યૌ ગોકુલ ગામ ।।૩।।
સાથિયે શ્યામા ઘરત દ્વારે સાત સીક બનાય ।।
નવ કિસોરી મુદિત હ્વૈ હ્વૈ ગહત જસુમતિ પાય ।।૪।।
ચૌક ચંદન લીપિકે આરતી ઘરીહૈ સંજોય ।।
કહત ઘોષકુમાર એસૌ આનંદ જો નિત હોય ।।૫।।
એક માનિની મંગલ ગાવે લીલા ગાવે ગ્વાલ ।।
એક માખન દૂધ દધિ લૈ છિરકત ફિરતહૈ બાલ ।।૬।।
એક હેરી દૈ દૈ નાચે ઐક ઝટકે ઘાઇ ।।
એક કાહૂ બદત નાંહી એક ખિલાવત ગાઇ ।।૭।।
એકનારી વૃદ્ધ બાલિક એક જોબનજોરિ ।।
એક કહૂ બદત નાંહી એક હંસત મુખ મોરિ ।।૮।।
કૃષ્ણ જન્મ પ્રેમ સાગર હોત ઘોષ વિલાસ ।।
દેખિ વ્રજકી સંપદા જન ફૂલે માધૌદાસ ।।૯।।

।। રાગ બિલાવલ ।।

ધન્ય યશોદા ભાગિ તિહારો જિન એસો સુત જાયો ।।
જાકે દરસ પરસ સુખ ઉપજત કુલકો તિમિર ન સાયો ।।૧।।
વિપ્ર સુજન ચારન બંદિજન સબે નંદ ગૃહુ આયો ।।
નૌતન સુભગ હરદ દૂધ દધિ, હરખિત શીશ બંધાયો ।।૨।।
ગર્ગ નિરુપ કીયે શુભ લચ્છિન અવગતિ હૈ અવિનાશી ।।
અવિનાશી "સૂરદાસ" પ્રભુકો યશ સુનિકે આનંદે વ્રજવાસી ।।૩।।

।। રાગ આસાવારી ।।

આજ સબ ગોકુલમેં આનંદ ।।
અર્ધ નિશા ભયે મોહન પ્રકટે ઘન ગરજત મંદ મંદ ।।૧।।
બંદિજન કોં નિકટ બુલાવત દાન દેત બાવા નંદ ।।
"કૃષ્ણદાસ" કી આશા પુરી શ્રી ગોકુલકે ચંદ ।।૨।।